

पिक:- कारले

कारले वाण:- Co-1 (ग्रिनलॉन्ग), MDU-1(व्हाईट लॉन्ग), मेघा, श्रुती, अनुज, स्वेता, संपदा, कुबेरलक्ष्मी, वरून.

हवामान :- या वाणास उष्ण व दमट हवामान चांगले मानवते. वेलीची वाढ व फळांच्या उत्पादनासाठी सरासरी 24° ते 27° तापमान अत्यंत पोषक आहे.

जमीन :- या पिकास रेताड किंवा मध्यम ते उत्तम निचऱ्याची भारी जमीन चालते. रेताड जमिनीत पीक लवकर येते. भरपूर सेंद्रिय खताचा वापर केल्यास हे पीक हलक्या जमिनीत चांगले येते, चोपण जमिनीत लावू नये.

बीज प्रक्रिया वेळ/ रासायनिक औषधे :- गाऊचो 70 डब्ल्यू. एस. 10 ग्रॅम/ किलो बियाणास ओलसर करून लावावे व अर्धा ते एक तास सावली मध्ये सुकवुन घ्यावे.

पेरणीची वेळ:- खरीप हंगाम : जून ते जुलै ; उन्हाळी हंगाम: जानेवारी ते फेब्रुवारी.

कारले बियाणे दर/ पेरणीची पद्धत :- बियांचा दर :- 2-2.5 किलो प्रति हेक्टर, पेरणीची पद्धत :-दोन ओळीतील अंतर 150 ते 180 सें. मी., दोन रोपांतील अंतर 60 सें.मी. येवढे असावे.

पेरणीची पद्धत :-दोन ओळीतील अंतर 150 ते 180 सें. मी., दोन रोपांतील अंतर 60 सें.मी. येवढे असावे.

रासायनिक खत मात्रा व खत देण्याचा कालावधी व वेळ

अ. क्र.	रासायनिक खत प्रति हेक्टरी	नत्र (कि. ग्रॅ.)	स्फुरद (कि. ग्रॅ.)	पालाश (कि. ग्रॅ.)
1	जमीन तयार करते वेळी	50	100	100
2	लागवडी नंतर 20-25 दिवसांनी	50	00	00
3	पीक फुलोऱ्यात असतांना	50	00	00
4	पहिल्या तोडणी नंतर	50	00	00
	एकूण	200	100	100

रोग व कीड नियंत्रण : खतासोबत फरटेरा (इपौंड) 4 किलो प्रति एकरी किंवा क्र्टिको (सिंजेंट) 2.5 किलो प्रति एकरी या दराने वापरल्यास सुमारे 21 दिवस मावा व तुडतुडे पासून चांगले संरक्षण मिळते.

अ. क्र.	रोग/ कीड	औषधाचे नाव	मात्रा प्रति लि पाण्यात
1	भुरी	बाविस्टिन	01 ग्रॅ. प्रति 01 लिटर
2	केवडा	डायथेन एम ४५	02 ग्रॅ. प्रति लि.
3	फळमाशी	लारविन.	02 ग्रॅ. प्रति लि.
4	तांबडे भुंगेरे	क्विनॉलफॉस २५ % ई.सी.	1.5 मि. ली प्रति लि
5	रसशोषक किडी	एक्तरा	04 ग्रॅम प्रति 10 लि
6	नागअळी	ट्रायझोफॉस	02 मी.ली. प्रति लि

तन नियंत्रण :- वेळोवेळी खुरपणी करून शेत स्वच्छ व तणमुक्त ठेवावे. एक दोन वखराच्या पाव्या देऊन माती लावावी व शेत तणमुक्त ठेवावे.

पाणी व्यवस्थापन:- खरीप हंगामात आवश्यकतेनुसार पाणी देणे व उन्हाळ्यात 3-4 दिवसांच्या अंतराने पाणी देणे.

पीक काढणी :- फळे कोवळी असतांना काढणी करावी. काढणी सकाळी किंवा संध्याकाळी केल्याने फळांचा ताजेपणा टिकून राहतो.

टीप:- वरील दिलेली माहिती हि आमच्या संशोधन केंद्रात घेतलेल्या चाचण्या वरून दिलेली आहे. यात जमीन, भौगोलिक हवामान, पिकाची नियोजन पद्धती इत्यादी कारणांमुळे या मध्ये बदल होऊ शकतो.

करेला किस्में:- Co-1 (ग्रिन लॉन्ग), MDU-1 (व्हाइट लॉन्ग), मेघा, श्रुती, अनुज, स्वेता, संपदा, कुबेरलक्ष्मी, वरून.

उपयुक्त जलवायु:- अच्छी उपज के लिए गर्म और मध्यम आर्द्रता वाले भौगोलिक क्षेत्र सर्वोत्तम होते हैं। इसलिए इसकी फसल जायद तथा खरीफ दोनों ऋतुओं में सफलता पूर्वक उगायी जा सकती है। बीज अंकुरण के लिए 30 से 35 डिग्री सेन्टीग्रेड तथा पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्रीसेन्टीग्रेड तापमान उत्तम होता है।

भूमिचयन:- इसे मिट्टी की कई किस्मों में उगाया जा सकता है। रेतली दोमट मिट्टी में उगाने पर यह अच्छे परिणाम देती है। मिट्टी की pH 6.5-7.0 होनी चाहिए या इसकी रोपाई के लिए थोड़ी क्षारीय मिट्टी भी अच्छी रहती है।

भूमि की तैयारी:- अधिक उपजलिए अच्छे तरह से तैयार ज़मीन की आवश्यकता होती है। मिट्टी के भुरभुरा होने तक 2-3 जोताई करें। है।

बीज उपचार:- बीजों की बुवाई से पहले गाऊचो 70 डब्लू. एस. 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचार करना चाहिए।

करेला बीज की मात्रा/ बुआई का अंतर:- बीज की मात्रा- 2.0 से 2.5 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए पर्याप्त होता है। बुआई का अंतर- अंतर:- दो कतारों में- 150-180 से.मी; दो पौधों में- 60 से.मी.

खाद एवं उर्वरक:- खेत तैयार करते समय 25 से 30 टन प्रति हेक्टेयर गली सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट अवश्य मिट्टी में मिलाएं

क्र.	रासायनिक खाद प्रति हेक्टेयर	नत्रजन (कि.ग्रा.)	फास्फोरस (कि.ग्रा.)	पोटाश (कि.ग्रा.)
1	बुवाई पूर्व	50	100	100
2	बुवाई के 20 दिन बाद	50	00	00
3	फूल खिलने पर	50	00	00
4	पहिले तुड़ाई के बाद	50	00	00
	एकूण	200	100	100

रोग और कीट : खाद के साथ फरटेरा (ड्रपौंड) 4 किलो प्रति एकड़ अथवा व्हर्टिको (सिंजेटा) 2.5 किलोप्रति एकड़ इस प्रमाण से एस्तेमाल करणे से 21 दिन तक रस चुसाने वाले किट से संरक्षण मिलता है।

क्र.	रोग/ कीट	नियंत्रण	मात्रा प्रति ली पाणी में
1	चूर्णील फफूंद	बाविस्टिन	01 ग्राम प्रति
2	डाऊनी मिल्ड्यू	डायथेन एम 8५	2.0 ग्राम ग्रॅ. प्रति ली
3	फल मक्खी	लारविन.	02 ग्राम प्रति ली
4	कद्दू का लाल कीट	किनॉलफॉस २५ % ई.सी.	1.5 मि. लि प्रति ली
5	रस चुसनेवाले किट	एक्टरा	0.5 ग्राम प्रति ली

सिंचाई प्रबंधन:- बिजाई के बाद पहली सिंचाई करें। गर्मियों के मौसम में प्रत्येक 6-7 दिनों के बाद सिंचाई करें और बारिश के मौसम में जरूरत पड़ने पर सिंचाई करें। इस फसल को कुल 8-9 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है।

खरपतवार नियंत्रण:- नदीनों की रोकथाम के लिए हाथों से गोडाई करें। 2-3 गोडाई पौधे की शुरूआती वृद्धि के समय करनी चाहिए। खादों की मात्रा डालने के समय मिट्टी में गोडाई की प्रक्रिया करें और मुख्यतः बारिश के मौसम में मिट्टी चढ़ाएं।

फलों की तुड़ाई:- फलों की तुड़ाई मुलायम अवस्था में करनी चाहिए। फलों की तुड़ाई चाकू से चार से पाँच दिन के अंतराल पर करना चाहिए, ताकि पौधे पर ज्यादा फल लगे।

टिपणी:- उपरोक्त सभी जाणकारी या हमारे अनुसंधान केंद्र पर किये गये प्रयोग पर आधारित है। भिन्न स्थानोपर भिन्न मौसम, भूमी प्रकार एवं ऋतू के कारण उपरोक्त जाणकारी मे बदलाव आसकता है।

Bitter gourd

Hybrids/Varieties: - Co-1(Green Long), MDU-1 (White Long), Megha, Shruti, Anuj, Sweta, Sampada, Kuberlakshmi, Varun.

Suitable Climate: - For good yield, geographical areas with warm and moderate humidity are best. Therefore, its crop can be grown successfully in both Zayed and Kharif seasons. 30 to 35 degree centigrade temperature is best for seed germination and 32 to 38 degree centigrade temperature is best for plant growth.

Soil Selection: - It can be grown in many types of soil. It gives good results when grown in sandy loam soil. The pH of the soil should be 6.5-7.0 or slightly alkaline soil is also good for its transplantation.

Land Preparation: - Well prepared land is required for higher yield. Do 2-3 ploughing till the soil becomes soft.

Seed Treatment: - Before sowing seeds, they should be treated with Gaucho 70 W.S. 10 gram per kg seed.

Seed rate: - Seed Quantity- 2.0 to 2.5 kg seed is sufficient for one hectare area.

Sowing Distance: - Between two rows- 150-180 cm; Between two plants- 60 cm.

Manure and Fertilizer: - While preparing the field, mix 25 to 30 tons of rotten cow dung manure or compost in the soil per hectare.

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

Disease and pest control

Along with fertilizer, Fertera (Dupond) 4 kg per acre or Vertico (Syngenta) 2.5 kg per acre, using this ratio gives protection from sucking pests for 21 days.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolphos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

Irrigation Management: - Do the first irrigation after sowing. In summer season, do irrigation after every 6-7 days and in rainy season, do irrigation as and when required. This crop requires a total of 8-9 irrigations.

Weed Control: - Do hand weeding to prevent weeds. 2-3 weeding should be done at the time of initial growth of the plant. Do the weeding process in the soil at the time of applying fertilizers and mainly do earthing up during the rainy season.

Fruit Picking: Fruits should be picked in a soft state. Fruits should be picked with a knife at an interval of four to five days, so that more fruits grow on the plant.

Note: - All the above information is based on the experiments conducted at our research center. The above information may change due to different weather, soil type and season at different places.

કારેલા

હાઇબ્રિડ/જાતો: - લીલો લાંબો, સફેદ લાંબો, મેઘા, શ્રુતિ, અનુજ, શ્વેતા, સંપદા, કુબેરલક્ષ્મી, વરુણ.

યોગ્ય આબોહવા: - સારી ઉપજ માટે, ગરમ અને મધ્યમ ભેજવાળા ભૌગોલિક વિસ્તારો શ્રેષ્ઠ છે. તેથી, તેનો પાક ઝાચેદ અને ખરીફ બંને ઋતુઓમાં સફળતાપૂર્વક ઉગાડી શકાય છે. બીજ અંકુરણ માટે ૩૦ થી ૩૫ ડિગ્રી સેન્ટીગ્રેડ તાપમાન શ્રેષ્ઠ છે અને છોડના વિકાસ માટે ૩૨ થી ૩૮ ડિગ્રી સેન્ટીગ્રેડ તાપમાન શ્રેષ્ઠ છે.

માટીની પસંદગી: - તે ઘણા પ્રકારની જમીનમાં ઉગાડી શકાય છે. રેતાળ લોમ જમીનમાં ઉગાડવામાં આવે ત્યારે તે સારા પરિણામો આપે છે. જમીનનો pH ૬.૫-૭.૦ હોવો જોઈએ અથવા તેના રોપણી માટે થોડી આલ્કલાઇન જમીન પણ સારી છે.

જમીનની તૈયારી: - વધુ ઉપજ માટે સારી રીતે તૈયાર કરેલી જમીન જરૂરી છે. જમીન નરમ થાય ત્યાં સુધી ૨-૩ વાર ખેડાણ કરો.

બીજ માવજત: - બીજ વાવતા પહેલા, તેમને ગૌચો ૭૦ ડબલ્યુ.એસ. ૧૦ ગ્રામ પ્રતિ કિલો બીજ સાથે માવજત કરવી જોઈએ.

બીજ દર: - બીજનો જથ્થો - એક હેક્ટર વિસ્તાર માટે ૨.૦ થી ૨.૫ કિલો બીજ પૂરતું છે.

વાવણીનું અંતર: - બે હરોળ વચ્ચે - ૧૫૦-૧૮૦ સે.મી.; બે છોડ વચ્ચે - ૬૦ સે.મી.

ખાતર અને ખાતર: - ખેતર તૈયાર કરતી વખતે, પ્રતિ હેક્ટર જમીનમાં ૨૫ થી ૩૦ ટન સડેલું ગાયનું છાણ ખાતર અથવા ખાતર ભેળવો.

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

રોગ અને જીવાત નિયંત્રણ રાસાયણિક દવાનો ડોઝ અને સમય
ખાતર સાથે, ફર્ટિલાઇઝર (ડુપોન્ડ) પ્રતિ એકર ૪ કિલો અથવા વર્ટીકો (સિંજેન્ટા) ૨.૫ કિલો પ્રતિ એકર, આ ગુણોત્તરનો ઉપયોગ કરવાથી ૨૧ દિવસ સુધી શોષક જીવાતોથી રક્ષણ મળે છે.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolphos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

સિંચાઈ વ્યવસ્થાપન: - વાવણી પછી પ્રથમ સિંચાઈ કરો. ઉનાળાની ઋતુમાં, દર ૬-૭ દિવસે સિંચાઈ કરો અને વરસાદની ઋતુમાં, જરૂર પડે ત્યારે સિંચાઈ કરો. આ પાકને કુલ ૮-૯ સિંચાઈની જરૂર પડે છે.

નીંદણ નિયંત્રણ: - નીંદણ અટકાવવા માટે હાથથી નીંદણ કરો. છોડના પ્રારંભિક વિકાસ સમયે ૨-૩ નીંદણ કરવા જોઈએ. ખાતર નાખતી વખતે જમીનમાં નીંદણ કરવાની પ્રક્રિયા કરો અને મુખ્યત્વે વરસાદની ઋતુ દરમિયાન માટીકામ કરો.

ફળ ચૂંટવું: ફળો નરમ સ્થિતિમાં ચૂંટવા જોઈએ. ચાર થી પાંચ દિવસના અંતરે છરી વડે ફળો ચૂંટવા જોઈએ, જેથી છોડ પર વધુ ફળો ઉગે.

નોંધ: - ઉપરોક્ત બધી માહિતી અમારા સંશોધન કેન્દ્રમાં કરવામાં આવેલા પ્રયોગો પર આધારિત છે. ઉપરોક્ત માહિતી અલગ અલગ સ્થળોએ અલગ અલગ હવામાન, માટીના પ્રકાર અને ઋતુને કારણે બદલાઈ શકે છે.

కాకరకాయ

సంకరజాతులు/రకాలు: - గ్రీన్ లాంగ్, వైట్ లాంగ్, మేఘ, శ్రుతి, అనుజ్, శ్వేత, సంపద, కుబేరలక్ష్మి, వరుణ్.

అనుకూలమైన వాతావరణం: - మంచి దిగుబడికి, వెచ్చని మరియు మితమైన తేమ ఉన్న భౌగోళిక ప్రాంతాలు ఉత్తమమైనవి. అందువల్ల, దీని పంటను జూలై-మరియు ఖరీఫ్ సీజన్లలో విజయవంతంగా పెంచవచ్చు. విత్తనాల అంకురీకృతికి 30 నుండి 35 డిగ్రీల సెంటీగ్రేడ్ ఉష్ణోగ్రత ఉత్తమం మరియు మొక్కల పెరుగుదలకు 32 నుండి 38 డిగ్రీల సెంటీగ్రేడ్ ఉష్ణోగ్రత ఉత్తమం.

నేల ఎంపిక: - దీనిని అనేక రకాల నేలలలో పెంచవచ్చు. ఇసుక లోమ్ నేలలో పెంచినప్పుడు ఇది మంచి ఫలితాలను ఇస్తుంది. నేల యొక్క pH 6.5-7.0 ఉండాలి లేదా కొద్దిగా ఆల్కలీన్ నేల దాని మార్పిడికి కూడా మంచిది.

భూమి తయారీ: - అధిక దిగుబడికి బాగా సిద్ధం చేసిన భూమి అవసరం. నేల మెత్తబడే వరకు 2-3 సార్లు దున్నండి.

విత్తన శుద్ధి: - విత్తనాలు విత్తే ముందు, వాటిని గోచో 70 W.S. తో శుద్ధి చేయాలి. కిలో విత్తనానికి 10 గ్రాములు.

విత్తన రేటు: - విత్తన పరిమాణం- 2.0 నుండి 2.5 కిలోల విత్తనం ఒక హెక్టారు విస్తీర్ణానికి సరిపోతుంది.

విత్తే దూరం: - రెండు వరుసల మధ్య- 150-180 సెం.మీ; రెండు మొక్కల మధ్య- 60 సెం.మీ.

ఎరువు మరియు ఎరువులు: - పొలాన్ని సిద్ధం చేస్తున్నప్పుడు, హెక్టారుకు 25 నుండి 30 టన్నుల కుళ్ళిన ఆవు పేడ ఎరువు లేదా కంపోస్ట్ ను మట్టిలో కలపండి.

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

వ్యాధి మరియు తెగులు నియంత్రణ రసాయన ఔషధం యొక్క మోతాదు మరియు సమయం
ఎరువులతో పాటు, ఎకరానికి ఫెర్టెరా (డూపాండ్) 4 కిలోలు లేదా ఎకరానికి వెర్మిక్ (సింజెంటా) 2.5 కిలోలు, ఈ నిష్పత్తిని ఉపయోగించడం వలన 21 రోజుల పాటు రసం పీల్చే తెగుల్లో నుండి రక్షణ లభిస్తుంది.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolphos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

నీటిపారుదల నిర్వహణ: - విత్తిన తర్వాత మొదటి నీటిపారుదల చేయండి. వేసవి కాలంలో, ప్రతి 6-7 రోజుల తర్వాత నీటిపారుదల చేయండి మరియు వర్షాకాలంలో, అవసరమైనప్పుడు నీటిపారుదల చేయండి. ఈ పంటకు మొత్తం 8-9 నీటిపారుదల అవసరం.

కలుపు నియంత్రణ: - కలుపు మొక్కలను నివారించడానికి చేతితో కలుపు తీయండి. మొక్క యొక్క ప్రారంభ పెరుగుదల సమయంలో 2-3 కలుపు తీయుట చేయాలి. ఎరువులు వేసే సమయంలో నేలలో కలుపు తీయుట ప్రక్రియ చేయండి మరియు ప్రధానంగా వర్షాకాలంలో మట్టిని తీయుట చేయండి.

పండ్ల కోత: పండ్లను మృదువైన స్థితిలో కోయాలి. నాలుగు నుండి ఐదు రోజుల వ్యవధిలో కత్తితో పండ్లను కోయాలి, తద్వారా మొక్కపై ఎక్కువ పండ్లు పెరుగుతాయి.

గమనిక: - పైన పేర్కొన్న సమాచారం అంతా మా పరిశోధన కేంద్రంలో నిర్వహించిన ప్రయోగాల ఆధారంగా ఉంటుంది. పైన పేర్కొన్న సమాచారం వేర్వేరు ప్రదేశాలలో వేర్వేరు వాతావరణం, నేల రకం మరియు సీజన్ కారణంగా మారవచ్చు.

ಹಾಗಲಕಾಯಿ

ಮಿಶ್ರಣಗಳು/ವೈವಿಧ್ಯಗಳು: - ಗ್ರೀನ್ ಲಾಂಗ್, ವೈಟ್ ಲಾಂಗ್, ಮೇಘ, ಶ್ರುತಿ, ಅನುಜ್, ಶ್ವೇತ, ಸಂಪದ, ಕುಬೇರಲಕ್ಷ್ಮಿ, ವರುಣ್.

ಸೂಕ್ತವಾದ ಹವಾಮಾನ: - ಉತ್ತಮ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ, ಬೆಚ್ಚಗಿನ ಮತ್ತು ಮಧ್ಯಮ ಆದ್ರ್ಯತೆಯನ್ನು ಹೊಂದಿರುವ ಭೌಗೋಳಿಕ ಪ್ರದೇಶಗಳು ಉತ್ತಮ. ಆದ್ದರಿಂದ, ಇದರ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಜಾಯದ್ ಮತ್ತು ಖಾರಿಫ್ ಋತುಗಳಲ್ಲಿ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆಯಬಹುದು. ಬೀಜ ಮೂಳಕೆಯೊಡೆಯಲು 30 ರಿಂದ 35 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಂಟಿಗ್ರೇಡ್ ತಾಪಮಾನವು ಉತ್ತಮವಾಗಿದೆ ಮತ್ತು ಸಸ್ಯಗಳ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ 32 ರಿಂದ 38 ಡಿಗ್ರಿ ಸೆಂಟಿಗ್ರೇಡ್ ತಾಪಮಾನವು ಉತ್ತಮವಾಗಿದೆ.

ಮಣ್ಣಿನ ಆಯ್ಕೆ: - ಇದನ್ನು ಹಲವು ರೀತಿಯ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯಬಹುದು. ಮರಳು ಮಿಶ್ರಿತ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಬೆಳೆದಾಗ ಇದು ಉತ್ತಮ ಫಲಿತಾಂಶಗಳನ್ನು ನೀಡುತ್ತದೆ. ಮಣ್ಣಿನ pH 6.5-7.0 ಆಗಿರಬೇಕು ಅಥವಾ ಸ್ವಲ್ಪ ಕ್ಷಾರೀಯ ಮಣ್ಣು ಅದರ ನಾಟಿಗೆ ಸಹ ಒಳ್ಳೆಯದು.

ಭೂಮಿ ತಯಾರಿಕೆ: - ಹೆಚ್ಚಿನ ಇಳುವರಿಗಾಗಿ ಚೆನ್ನಾಗಿ ತಯಾರಿಸಿದ ಭೂಮಿ ಅಗತ್ಯವಿದೆ. ಮಣ್ಣು ಮೃದುವಾಗುವವರೆಗೆ 2-3 ಬಾರಿ ಉಳುಮೆ ಮಾಡಿ.

ಬೀಜ ಸಂಸ್ಕರಣೆ: - ಬೀಜಗಳನ್ನು ಬಿತ್ತುವ ಮೊದಲು, ಅವುಗಳನ್ನು ಗೌಚೊ 70 W.S. ನೊಂದಿಗೆ ಸಂಸ್ಕರಿಸಬೇಕು. ಪ್ರತಿ ಕೆಜಿ ಬೀಜಕ್ಕೆ 10 ಗ್ರಾಂ.

ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ: - ಬೀಜದ ಪ್ರಮಾಣ- ಒಂದು ಹೆಕ್ಟೇರ್ ಪ್ರದೇಶಕ್ಕೆ 2.0 ರಿಂದ 2.5 ಕೆಜಿ ಬೀಜ ಸಾಕು.

ಬಿತ್ತನೆ ಅಂತರ: - ಎರಡು ಸಾಲುಗಳ ನಡುವೆ- 150-180 ಸೆಂ.ಮೀ; ಎರಡು ಸಸ್ಯಗಳ ನಡುವೆ- 60 ಸೆಂ.ಮೀ.

ಗೊಬ್ಬರ ಮತ್ತು ಗೊಬ್ಬರ: - ಹೊಲವನ್ನು ಸಿದ್ಧಪಡಿಸುವಾಗ, ಪ್ರತಿ ಹೆಕ್ಟೇರ್‌ಗೆ 25 ರಿಂದ 30 ಟನ್ ಕೊಳೆತ ಹಸುವಿನ ಗೊಬ್ಬರ ಅಥವಾ ಕಾಂಪೋಸ್ಟ್ ಅನ್ನು ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಮಿಶ್ರಣ ಮಾಡಿ.

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

ರೋಗ ಮತ್ತು ಕೀಟ ನಿಯಂತ್ರಣ ರಾಸಾಯನಿಕ ಔಷಧದ ಡೋಸೇಜ್ ಮತ್ತು ಸಮಯ
ಗೊಬ್ಬರದೊಂದಿಗೆ, ಫರ್ಟಿಲೈಸರ್ (ಡುಪಾಂಡ್) ಎಕರೆಗೆ 4 ಕೆಜಿ ಅಥವಾ ವರ್ಟಿಕೊ (ಸಿಂಜೆಂಟಾ) ಎಕರೆಗೆ 2.5 ಕೆಜಿ, ಈ ಅನುಪಾತವನ್ನು ಬಳಸುವುದರಿಂದ 21 ದಿನಗಳವರೆಗೆ ಹೀರುವ ಕೀಟಗಳಿಂದ ರಕ್ಷಣೆ ಸಿಗುತ್ತದೆ.

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolophos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

ನೀರಾವರಿ ನಿರ್ವಹಣೆ: - ಬಿತ್ತನೆಯ ನಂತರ ಮೊದಲ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ. ಬೇಸಿಗೆಯಲ್ಲಿ, ಪ್ರತಿ 6-7 ದಿನಗಳ ನಂತರ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ ಮತ್ತು ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ, ಅಗತ್ಯವಿರುವಂತೆ ನೀರಾವರಿ ಮಾಡಿ. ಈ ಬೆಳೆಗೆ ಒಟ್ಟು 8-9 ನೀರಾವರಿ ಅಗತ್ಯವಿದೆ.

ಕಳೆ ನಿಯಂತ್ರಣ: - ಕಳೆಗಳನ್ನು ತಡೆಗಟ್ಟಲು ಕೈ ಕಳೆ ತೆಗೆಯಿರಿ. ಸಸ್ಯದ ಆರಂಭಿಕ ಬೆಳವಣಿಗೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ 2-3 ಕಳೆ ತೆಗೆಯಬೇಕು. ರಸಗೊಬ್ಬರಗಳನ್ನು ಅನ್ವಯಿಸುವ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಮಣ್ಣಿನಲ್ಲಿ ಕಳೆ ತೆಗೆಯುವ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಯನ್ನು ಮಾಡಿ ಮತ್ತು ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಮಳೆಗಾಲದಲ್ಲಿ ಭೂಮಿಯನ್ನು ಉದ್ದರಿಸುವುದು.

ಹಣ್ಣು ಕೀಳುವುದು: ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ಮೃದುವಾದ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ಕೀಳಬೇಕು. ಹಣ್ಣುಗಳನ್ನು ನಾಲ್ಕರಿಂದ ಐದು ದಿನಗಳ ಮಧ್ಯಂತರದಲ್ಲಿ ಚಾಕುವಿನಿಂದ ಕೀಳಬೇಕು, ಇದರಿಂದ ಸಸ್ಯದಲ್ಲಿ ಹೆಚ್ಚಿನ ಹಣ್ಣುಗಳು ಬೆಳೆಯುತ್ತವೆ.

ಗಮನಿಸಿ: - ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಮಾಹಿತಿಯು ನಮ್ಮ ಸಂಶೋಧನಾ ಕೇಂದ್ರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸಿದ ಪ್ರಯೋಗಗಳನ್ನು ಆಧರಿಸಿದೆ. ಮೇಲಿನ ಮಾಹಿತಿಯು ವಿಭಿನ್ನ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ವಿಭಿನ್ನ ಹವಾಮಾನ, ಮಣ್ಣಿನ ಪ್ರಕಾರ ಮತ್ತು ಋತುವಿನ ಕಾರಣದಿಂದಾಗಿ ಬದಲಾಗಬಹುದು.

তিতা লাও

সংকৰ/জাত: - সেউজীয়া দীঘল, বগা দীঘল, মেঘা, শ্ৰুতি, অনুজ, স্বেতা, সম্পাদ, কুবেৰলক্ষ্মী, বৰুণ।

উপযুক্ত জলবায়ু: - ভাল উৎপাদনৰ বাবে উষ্ণ আৰু মধ্যমীয়া আৰ্দ্ৰতা থকা ভৌগোলিক অঞ্চলটোৱেই উত্তম। গতিকে ইয়াৰ শস্য জায়েদ আৰু খাৰিফ দুয়োটা বতৰতে সফলতাৰে খেতি কৰিব পৰা যায়। বীজৰ অংকুৰণৰ বাবে ৩০ৰ পৰা ৩৫ ডিগ্ৰী চেন্টিগ্ৰেড উষ্ণতা আৰু গছৰ বৃদ্ধিৰ বাবে ৩২ৰ পৰা ৩৮ ডিগ্ৰী চেন্টিগ্ৰেড উষ্ণতা উত্তম।

মাটি নিৰ্বাচন: - বহু প্ৰকাৰৰ মাটিত ইয়াৰ খেতি কৰিব পাৰি। বালিচহীয়া লোম মাটিত খেতি কৰিলে ভাল ফল পোৱা যায়। মাটিৰ পি এইচ ৬.৫-৭.০ হ'ব লাগে বা সামান্য ক্ষাৰকীয় মাটিও ইয়াৰ ৰোপণৰ বাবে ভাল।

মাটি প্ৰস্তুতি: - অধিক উৎপাদনৰ বাবে ভালদৰে প্ৰস্তুত কৰা মাটিৰ প্ৰয়োজন। মাটি কোমল হোৱালৈকে ২-৩ টা হাল বাই কৰক।

বীজৰ চিকিৎসা: - বীজ সিঁচাৰ আগতে গৌচো ৭০ ডব্লিউ.এছ. প্ৰতি কেজি বীজত ১০ গ্ৰাম।

বীজৰ হাৰ: - বীজৰ পৰিমাণ- এক হেক্টৰ মাটিৰ বাবে ২.০ৰ পৰা ২.৫ কেজি বীজ যথেষ্ট।

বীজ সিঁচাৰ দূৰত্ব: - দুটা শাৰীৰ মাজত- ১৫০-১৮০ চে.মি.; দুটা গছৰ মাজত- ৬০ চে.মি.

গোবৰ আৰু সাৰ: - পথাৰ প্ৰস্তুত কৰাৰ সময়ত প্ৰতি হেক্টৰ মাটিত ২৫ৰ পৰা ৩০ টন পচি যোৱা গৰুৰ গোবৰ বা পচন সাৰ মিহলাই দিব লাগে।

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

ৰোগ আৰু কীট-পতংগ নিয়ন্ত্ৰণ ৰাসায়নিক ঔষধৰ মাত্ৰা আৰু সময়

সাৰৰ লগতে ফেৰটেৰা (ডুপণ্ড) প্ৰতি একৰত ৪ কেজি বা ভাটিকো (চিঞ্জেন্টা) ২.৫ কিলোগ্ৰাম প্ৰতি একৰত এই অনুপাত ব্যৱহাৰ কৰিলে ২১ দিনৰ বাবে চুহি খোৱা কীট-পতংগৰ পৰা সুৰক্ষা পোৱা যায়।

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolophos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

জলসিঞ্চন ব্যৱস্থাপনা: - বীজ সিঁচাৰ পিছত প্ৰথম জলসিঞ্চন কৰক। গ্ৰীষ্মকালত প্ৰতি ৬-৭ দিনৰ মূৰে মূৰে জলসিঞ্চন কৰক আৰু বাৰিষাৰ সময়ত প্ৰয়োজন অনুসৰি জলসিঞ্চন কৰক। এই শস্যত মুঠ ৮-৯ টা জলসিঞ্চনৰ প্ৰয়োজন হয়।

অপতৃণ নিয়ন্ত্ৰণ: - অপতৃণ ৰোধ কৰিবলৈ হাতেৰে ঘাঁহ কাটিব লাগে। গছজোপাৰ প্ৰাৰম্ভিক বৃদ্ধিৰ সময়ত ২-৩ টা অপতৃণ কাটিব লাগে। সাৰ প্ৰয়োগৰ সময়ত মাটিত অপতৃণ নিষ্কাশন প্ৰক্ৰিয়াটো কৰক আৰু মূলতঃ বাৰিষাৰ সময়ত মাটিৰ কাম কৰক।

ফল ছিঙা: ফল কোমল অৱস্থাত ছিঙিব লাগে। চাৰি-পাঁচ দিনৰ ব্যৱধানত দাৰে ফল ছিঙিব লাগে, যাতে গছজোপাৰ ওপৰত অধিক ফল গজে।

বি:দ্ৰ: - ওপৰৰ সকলো তথ্য আমাৰ গৱেষণা কেন্দ্ৰত কৰা পৰীক্ষাৰ ভিত্তিত কৰা হৈছে। বিভিন্ন স্থানত বিভিন্ন বতৰ, মাটিৰ প্ৰকাৰ আৰু ঋতুৰ বাবে উপৰোক্ত তথ্য সলনি হ'ব পাৰে।

করলা

হাইব্রিড/জাত: - সবুজ লম্বা, সাদা লম্বা, মেঘা, শ্রুতি, অনুজ, শ্বেতা, সম্পদ, কুবেরলক্ষ্মী, বরুণ।

উপযুক্ত জলবায়ু: - ভালো ফলনের জন্য, উষ্ণ এবং মাঝারি আর্দ্রতা সহ ভৌগোলিক অঞ্চলগুলি সর্বোত্তম। অতএব, জায়েদ এবং খরিফ উভয় মৌসুমেই এর ফসল সফলভাবে চাষ করা যেতে পারে। বীজ অঙ্কুরোদগমের জন্য ৩০ থেকে ৩৫ ডিগ্রি সেন্টিগ্রেড তাপমাত্রা সর্বোত্তম এবং উদ্ভিদ বৃদ্ধির জন্য ৩২ থেকে ৩৮ ডিগ্রি সেন্টিগ্রেড তাপমাত্রা সর্বোত্তম।

মাটি নির্বাচন: - এটি বিভিন্ন ধরণের মাটিতে চাষ করা যেতে পারে। বেলে দোআঁশ মাটিতে চাষ করলে এটি ভালো ফলাফল দেয়। মাটির pH ৬.৫-৭.০ হওয়া উচিত অথবা সামান্য ক্ষারীয় মাটিও এর রোপণের জন্য ভালো।

ভূমি প্রস্তুতি: - উচ্চ ফলনের জন্য ভালভাবে প্রস্তুত জমি প্রয়োজন। মাটি নরম না হওয়া পর্যন্ত ২-৩ বার চাষ করুন।

বীজ শোধন: - বীজ বপনের আগে, প্রতি কেজি বীজে গাউচো ৭০ ওয়াট.এস. ১০ গ্রাম দিয়ে শোধন করতে হবে।

বীজের হার: - বীজের পরিমাণ - এক হেক্টর জমির জন্য ২.০ থেকে ২.৫ কেজি বীজ যথেষ্ট।

বপনের দূরত্ব: - দুই সারির মধ্যে - ১৫০-১৮০ সেমি; দুটি গাছের মধ্যে - ৬০ সেমি।

সার এবং সার: - ক্ষেত প্রস্তুত করার সময়, প্রতি হেক্টরে মাটিতে ২৫ থেকে ৩০ টন পচা গোবর সার বা কম্পোস্ট মিশিয়ে দিন।

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

রাসায়নিক ঔষধের মাত্রা এবং সময়

সারের পাশাপাশি, ফেরটেরা (ডুপন্ড) প্রতি একরে ৪ কেজি অথবা ভার্টিকো (সিনজেন্টা) প্রতি একরে ২.৫ কেজি, এই অনুপাত ব্যবহার করলে ২১ দিনের জন্য শোষক পোকামাকড় থেকে সুরক্ষা পাওয়া যায়।

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolpos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

সেচ ব্যবস্থাপনা: - বপনের পর প্রথম সেচ দিন। গ্রীষ্মকালে, প্রতি ৬-৭ দিন পর পর সেচ দিন এবং বর্ষাকালে, যখন প্রয়োজন তখন সেচ দিন। এই ফসলের জন্য মোট ৮-৯টি সেচ প্রয়োজন।

আগাছা নিয়ন্ত্রণ: - আগাছা প্রতিরোধের জন্য হাতে আগাছা পরিষ্কার করুন। গাছের প্রাথমিক বৃদ্ধির সময় ২-৩টি আগাছা পরিষ্কার করতে হবে। সার প্রয়োগের সময় মাটিতে আগাছা পরিষ্কার করতে হবে এবং প্রধানত বর্ষাকালে মাটি পরিষ্কার করতে হবে।

ফল সংগ্রহ: ফল নরম অবস্থায় তোলা উচিত। চার থেকে পাঁচ দিনের ব্যবধানে ছুরি দিয়ে ফল সংগ্রহ করা উচিত, যাতে গাছে আরও বেশি ফল ধরে।

বিঃদ্রঃ: - উপরের সমস্ত তথ্য আমাদের গবেষণা কেন্দ্রে পরিচালিত পরীক্ষার উপর ভিত্তি করে। বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন আবহাওয়া, মাটির ধরণ এবং ঋতুর কারণে উপরের তথ্য পরিবর্তিত হতে পারে।

ਕਰੇਲਾ

ਹਾਈਬ੍ਰਿਡ/ਕਿਸਮਾਂ: - ਹਰਾ ਲੰਬਾ, ਚਿੱਟਾ ਲੰਬਾ, ਮੇਘਾ, ਸ਼ਰੂਤੀ, ਅਨੁਜ, ਸ਼ਵੇਤਾ, ਸੰਪਦਾ, ਕੁਬੇਰ ਲਕਸ਼ਮੀ, ਵਰੁਣ।

ਉਚਿਤ ਜਲਵਾਯੂ: - ਚੰਗੀ ਉਪਜ ਲਈ, ਗਰਮ ਅਤੇ ਦਰਮਿਆਨੀ ਨਮੀ ਵਾਲੇ ਭੂਗੋਲਿਕ ਖੇਤਰ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ, ਇਸਦੀ ਫਸਲ ਜ਼ਾਇਦ ਅਤੇ ਖਰੀਫ਼ ਦੋਵਾਂ ਮੌਸਮਾਂ ਵਿੱਚ ਸਫਲਤਾਪੂਰਵਕ ਉਗਾਈ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਬੀਜ ਦੇ ਉਗਣ ਲਈ 30 ਤੋਂ 35 ਡਿਗਰੀ ਸੈਂਟੀਗਰੇਡ ਤਾਪਮਾਨ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹੈ ਅਤੇ ਪੌਦਿਆਂ ਦੇ ਵਾਧੇ ਲਈ 32 ਤੋਂ 38 ਡਿਗਰੀ ਸੈਂਟੀਗਰੇਡ ਤਾਪਮਾਨ ਸਭ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਹੈ।

ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਚੋਣ: - ਇਸਨੂੰ ਕਈ ਕਿਸਮਾਂ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਰੇਤਲੀ ਦੇਸ਼ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਉਗਾਉਣ 'ਤੇ ਇਹ ਚੰਗੇ ਨਤੀਜੇ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਦਾ pH 6.5-7.0 ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਾਂ ਥੋੜ੍ਹੀ ਜਿਹੀ ਖਾਰੀ ਮਿੱਟੀ ਵੀ ਇਸਦੀ ਬਿਜਾਈ ਲਈ ਵਧੀਆ ਹੈ।

ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ: - ਵੱਧ ਉਪਜ ਲਈ ਚੰਗੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਤਿਆਰ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਮਿੱਟੀ ਨਰਮ ਹੋਣ ਤੱਕ 2-3 ਵਾਰ ਵਾਹੋ।

ਬੀਜ ਉਪਚਾਰ: - ਬੀਜ ਬੀਜਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ, ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਗਾਉਚੇ 70 ਡਬਲਿਊ.ਐਸ. 10 ਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਕਿਲੋ ਬੀਜ ਨਾਲ ਉਪਚਾਰ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਬੀਜ ਦਰ: - ਬੀਜ ਦੀ ਮਾਤਰਾ - 2.0 ਤੋਂ 2.5 ਕਿਲੋ ਬੀਜ ਇੱਕ ਹੈਕਟੇਅਰ ਖੇਤਰ ਲਈ ਕਾਫ਼ੀ ਹੈ।

ਬਿਜਾਈ ਦੀ ਦੂਰੀ: - ਦੋ ਕਤਾਰਾਂ ਵਿਚਕਾਰ - 150-180 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ; ਦੋ ਪੌਦਿਆਂ ਵਿਚਕਾਰ - 60 ਸੈਂਟੀਮੀਟਰ।

ਖਾਦ ਅਤੇ ਖਾਦ: - ਖੇਤ ਤਿਆਰ ਕਰਦੇ ਸਮੇਂ, ਪ੍ਰਤੀ ਹੈਕਟੇਅਰ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ 25 ਤੋਂ 30 ਟਨ ਸੜੀ ਹੋਈ ਗੋਬਰ ਦੀ ਖਾਦ ਜਾਂ ਖਾਦ ਮਿਲਾਓ।

Sr. No.	Chemical fertilizers per hectare	Nitrogen (kg)	Phosphorus (kg)	Potash (kg)
1	Before sowing	50	100	100
2	20 days after sowing	50	00	00
3	At the time of flowering	50	00	00
4	After first harvesting	50	00	00
	Total	200	100	100

ਰੋਗ ਅਤੇ ਕੀਟ ਨਿਯੰਤਰਣ ਰਸਾਇਣਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਖੁਰਾਕ ਅਤੇ ਸਮਾਂ

ਖਾਦ ਦੇ ਨਾਲ, ਫਰਟੇਰਾ (ਡੁਪੋਂਡ) 4 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ ਜਾਂ ਵਰਟੀਕੋ (ਸਿੰਜੈਟਾ) 2.5 ਕਿਲੋਗ੍ਰਾਮ ਪ੍ਰਤੀ ਏਕੜ, ਇਸ ਅਨੁਪਾਤ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਨਾਲ 21 ਦਿਨਾਂ ਲਈ ਚੂਸਣ ਵਾਲੇ ਕੀੜਿਆਂ ਤੋਂ ਸੁਰੱਖਿਆ ਮਿਲਦੀ ਹੈ।

Sr. No.	Disease/ Pest	Control	Quantity per liter of water
1	Powdery mildew	Bavistin	01 gram per liter
2	Downy mildew	Dithane M 45	2.0 grams per liter
3	Fruit fly	Larvin	02 grams per liter
4	Red pumpkin beetle	Quinolphos 25% EC	1.5 ml per liter
5	Sucking insects	Actra	0.5 grams per liters

ਸਿੰਜਾਈ ਪ੍ਰਬੰਧਨ: - ਬਿਜਾਈ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਪਹਿਲੀ ਸਿੰਜਾਈ ਕਰੋ। ਗਰਮੀਆਂ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ, ਹਰ 6-7 ਦਿਨਾਂ ਬਾਅਦ ਸਿੰਜਾਈ ਕਰੋ ਅਤੇ ਬਰਸਾਤ ਦੇ ਮੌਸਮ ਵਿੱਚ, ਲੋੜ ਅਨੁਸਾਰ ਸਿੰਜਾਈ ਕਰੋ। ਇਸ ਫਸਲ ਨੂੰ ਕੁੱਲ 8-9 ਸਿੰਜਾਈਆਂ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ।

ਨਦੀਨ ਨਿਯੰਤਰਣ: - ਨਦੀਨਾਂ ਨੂੰ ਰੋਕਣ ਲਈ ਹੱਥੀਂ ਗੋਡੀ ਕਰੋ। ਪੌਦੇ ਦੇ ਸ਼ੁਰੂਆਤੀ ਵਾਧੇ ਸਮੇਂ 2-3 ਗੋਡੀ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਖਾਦ ਪਾਉਣ ਵੇਲੇ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਗੋਡੀ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਕਿਰਿਆ ਕਰੋ ਅਤੇ ਮੁੱਖ ਤੌਰ 'ਤੇ ਬਰਸਾਤ ਦੇ ਮੌਸਮ ਦੌਰਾਨ ਮਿੱਟੀ ਸਾਫ਼ ਕਰੋ।

ਫਲਾਂ ਦੀ ਚੁਗਾਈ: ਫਲਾਂ ਨੂੰ ਨਰਮ ਹਾਲਤ ਵਿੱਚ ਤੋੜਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਫਲਾਂ ਨੂੰ ਚਾਰ ਤੋਂ ਪੰਜ ਦਿਨਾਂ ਦੇ ਅੰਤਰਾਲ 'ਤੇ ਚਾਕੂ ਨਾਲ ਤੋੜਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਤਾਂ ਜੋ ਪੌਦੇ 'ਤੇ ਵਧੇਰੇ ਫਲ ਉੱਗਣ।

ਨੋਟ: - ਉਪਰੋਕਤ ਸਾਰੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਡੇ ਖੋਜ ਕੇਂਦਰ ਵਿਖੇ ਕੀਤੇ ਗਏ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਹੈ। ਉਪਰੋਕਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਥਾਵਾਂ 'ਤੇ ਵੱਖ-ਵੱਖ ਮੌਸਮ, ਮਿੱਟੀ ਦੀ ਕਿਸਮ ਅਤੇ ਮੌਸਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਦਲ ਸਕਦੀ ਹੈ।